विद्यार्थियों ने राखीगढ़ी का दौरा कर इतिहास के बारे में जाना

इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा. महेंद्र सिंह, प्राध्यापिका डा. सुरूचि शर्मा व सहायक प्राध्यापक महेंद्र सिंह के नेतृत्व में किया भ्रमण

दयानन्द महाविद्यालय के विद्यार्थी व स्टाफ राखीगढ़ी के टीलों को देखते हुए। • विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, हिसार : दयानन्द महाविद्यालय, हिसार के इतिहास विभाग के तत्वाधान में 130 विद्यार्थियों ने इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा. महेंद्र सिंह, प्राध्यापिका डा. सुरूचि शर्मा व सहायक प्राध्यापक महेंद्र सिंह के नेतृत्व में ऐतिहासिक व विरासत स्थल राखीगढ़ी का शैक्षणिक भ्रमण किया और ज्ञान अर्जित करने के लिए राखीगढ़ी के 6500 वर्ष पूर्व रह रहे वासियों से रूबरू हुए।

भ्रमण का प्रारम्भ राखीगढ़ी के ऐतिहासिक महत्व व खनन के विभिन्न चरणों की जानकारी के माध्यम से हुआ जिसमें डा. सूरजभान, डा. अमरेन्द्रनाथ. व डा. बसन्त सिंधे के द्वारा किए गए खनन स्थलों से विद्यार्थियों को परिचित करवाया गया। इसके बाद वर्तमान में जारी खनन प्रक्रिया व विशेषज्ञों से परिचित होकर विद्यार्थी विस्तृत विश्लेषण की ओर बढ़े। खनन प्रक्रिया की जानकारी का पहलु टीले नंबर एक के परिधि क्षेत्र से हुआ। यहां पुरातत्व विशेषज्ञ व विज्ञान विशेषज्ञ आलोक शर्मा की ओर से टीले के चयन खनन के लिए बने वर्गाकार स्थलों और विभिन्न पुरावशेषों के विभिन्न स्वरूपों को वर्णित किया। इसके बाद टीले नंबर सात पर जाना हुआ। वहा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संयुक्त निदेशक डा. संजय मन्जूल ने अपना उद्बोधन दिया। जिसमें राखीगढ़ी की महता, विरासत, अंतरराष्ट्रीय पहचान, खनन के महत्व और भावी परिदृश्य पर प्रकाश डाला। इस भ्रमण में मुख्य उत्तरदायित्व इतिहास परिषद् के पदाधिकारियों ने बखूबी निभाया। इस टीम में हिन्दी विभाग से डा. निर्मल व गणित विभाग से प्राध्यापक अमनदीप भी शामिल रहे।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा. विक्रमजीत सिंह ने इस भ्रमण के लिए इतिहास विभाग को हर प्रकार का सहयोग दिया और सफल आयोजन के लिए मुबारकबाद दी।

डीएन कॉलेज विद्यार्थियों ने 6500 वर्ष पूर्व रहे वासियों के जीवन को जाना

हिसार/ 14 मई/ रिपोर्टर

दयानन्द महाविद्यालय के 130 विद्यार्थियों ने इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र सिंह, प्राध्यापिका डॉ. सुरूचि शर्मा व सहायक प्राध्यापक महेन्द्र सिंह के नेतृत्व में ऐतिहासिक व विरासत स्थल राखीगढ़ी का जैक्षणिक भ्रमण किया तथा ज्ञान अर्जित करने के लिए 6500 वर्ष पूर्व रहे वासियों के जीवन को जाना। डॉ. सूरजभान, डॉ. आमरेन्द्रनाथ, व डॉ. बसन्त सिन्गे के द्वारा किए गए खनन स्थलों से विद्यार्थियों को परिचित करवाया गया। खनन प्रक्रिया की जानकारी का पहला टीले नम्बर एक के परिधि क्षेत्र से हुआ। यहां पुरातत्व विशेषज्ञ व नृ-विज्ञान विशेषज्ञ आलोक शर्मा ने टीले के चयन खनन के लिए बने वर्गाकार स्थलों तथा विभिन्न पुरावशेषों के विभिन्न स्वरूपों को वर्णित किया। उन्होंने खनन में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों तथा टीम द्वारा खनन की प्रक्रिया के बारे में भी बताया। उन्होंने इस टीले की 27 फीट तक गहराई की विभिन्न परतों को तहें विद्यार्थियों के समक्ष खोली। इसी तरह की जानकारी डॉ. सोनू नागर के द्वारा टीला नम्बर तीन के बारे में दी गई। उन्होंने इस टीले से प्राप्त मानव कंकालों के बारे में भी बताया। इसके बाद विद्यार्थियों ने मृदभांड क्षेत्र में खनन से प्राप्त व सजी हुई सामग्री को देखा। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. संजय मन्जुल ने राखीगढ़ी की महता, विरासत, अन्तर्राष्ट्रीय पहचान, खनन के महत्व तथा भावी परिदृश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रश्नों के उत्तर देकर विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को भी शान्त किया। उन्होंने इस सभ्यता के नष्ट होने के बारे में भी अपना पक्ष रखा। इसी कड़ी में इस टीले के प्रभारी डॉ. प्रवीन केसरी ने इस टीले से निकले कंकालों के बारे में बताया। उन्होंने यह बताया कि विश्व भर में यह इकलौता पुरातत्व स्थल है जिसमें डीएनए की रिपोर्ट पूरे जगत के लिए महत्व रखती है। उन्होंने कंकालों को सहेजने के बारे में भी बताया। इसके बाद उन्होंने इस टीले पर लगभग 6000 वर्ष पूर्व चिर निन्द्रा में सोई महिला के बारे में बताया। जो 5 फुट 8 इंच की थी तथा आयु 40 वर्ष की रही होगी। उसका सिर उत्तर की ओर था। उसके बर्तन, खाने का सामान व प्रयोग की चीजें दिखाई। इस महिला के हाथ में मिट्टी की चूड़ियां तथा गर्दन के पास तांबे का दर्पण भी मिला। इस महिला के दांत आज भी मजबूत दिखाई दे रहे थे। इस तरह विभिन्न दृश्य देखकर विद्यार्थियों की चेतना में लगभग 6500-3000 वर्ष पहले की राखीगढ़ी जीवंत हो गयी। भ्रमण टीम में हिन्दी विभाग से डॉ. निर्मल व गणित विभाग से प्राध्यापक अमनदीप भी शामिल रहे।